स्वतन्त्रता संग्राम व वागड़ के जननायक : हीरालाल उपाध्याय

डॉ. समीर व्यास
इतिहास विभाग, विद्याभवन रूरल इंस्टीट्यूट, स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान) भारत

वागड़ की गरीब और अनपढ़ जनता को सामन्ती व अंग्रेजी शोषण, अन्याय और अत्याचारों से मुक्ति दिलाने और देश को आजादी दिलाने में अपने जीवन को पूर्ण रूप से समर्पित कर देने वाले महापुरुष श्री हीरालाल उपाध्याय का जन्म 1920 ई. में वर्तमान डूँगरपुर जिले के आसपुर तहसील के इन्दौड़ा गाँव में हुआ। इनके पिता कमल उपाध्याय थे इनके तीन भाई शिवराम उपाध्याय, प्रेमजी उपाध्याय व माँगीलाल उपाध्याय तथा दो बहिने स्व. भूरीबाई व नर्मदाबाई है पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण मात्र 10 वर्ष की आयु में जलगाँव चले गये। वहाँ होटल में नौकरी कर ली। हीरालाल उपाध्याय का विवाह 1949 ई. में डूँगरपुर की हंसमुख देवी के साथ सम्पन्न हुआ। इनके चार पुत्र राजेन्द्र उपाध्याय, प्रदीप उपाध्याय, सतेन्द्र उपाध्याय व वशिष्ठ कुमार तथा दो पुत्रियाँ रीता कुमारी व रेखा कुमारी है।[1]

मात्र दस वर्ष की आयु में उनका सामना जीवन निर्वाह के संकटों सें हुआ और जीवन बसर के लिए रोजगार की तलाश में उन्होंने महाराष्ट्र की राह ली। वागड़ से कोसो दूर मुम्बई और अन्य शहरों में उन्हें होटलों में काम–धन्धा करना पड़ा। उन दिनों पूरे देश में स्वाधीनता आन्दोलन का संघर्ष पूरे वेग पर था।

ऐसे में महाराष्ट्र आजादी की लड़ाई का खास केन्द्र बना हुआ था। इसी माहौल में आजादी के दीवानों की सभाओं, सम्मेलनों और प्रदर्शनों को देख हीरालाल के मन पर इसका गहरा असर हुआ और वे स्वतन्त्रता आन्दोलन की धाराओं से जुड़ते चले गये।[2] जलगाँव में हीरालाल उपाध्याय ने सर्वप्रथम कृपलानी का भाषण सुना और उनके मन में देशभावना विकसित हुई। सन् 1941–42 में हीरालाल उपाध्याय बम्बई, अकोला चले गये। वहाँ लॉज में नौकरी की, आजादी की लड़ाई में भाग लेने के कारण उपाध्याय को पकड़ लिया। कुछ दिनों बाद बम्बई से जलगाँव चले गये।[3]

बम्बई में स्वातंत्र्य समर के महायोद्धा सुभाषचन्द्र बोस और अन्य नेताओं के जोशीले भाषण ने उनके देश भक्ति के जज्बे को बहुगुणित किया। तभी ये नेताजी के नारे 'जय हिन्द' के नाम से मशहूर हो गये। 1942 ई. में भारत छोड़ो आन्दोलन के समय उपाध्याय को मुम्बई में गिरफ्तार कर लिया गया। 15 वर्ष तक महाराष्ट्र में विभिन्न जगहों पर नौकरी करते रहे तथा स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेते रहे।[4] 1944 ई. में उपाध्याय जलगाँव छोड़कर इन्दौड़ा आये। इन्दौड़ा में उन्होंने गाँव के लोगों को इकट्ठा कर महात्मा गाँधी, पंडित नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन के बारे में जानकारी दी तथा डूँगरपुर रियासत द्वारा किसानों, भीलों, महाजनों, पटेलों आदि से करायी जाने वाली बेगार आदि का विरोध किया। उपाध्याय के घर के पीछे सदेड़ा वृक्ष पर तिरगां झण्डा फहराया गया। इस पर वहाँ के ठाकुर हडम् त सिहं ने रावले में बुलाकर काफी अभद्र व्यवहार किया और डराया धमकाया तथा झण्डा नीचे उतारने के लिए कहा लेकिन उपाध्याय ने इन्कार कर दिया।[5]

1944 ई. में डूँगरपुर में उपाध्याय ने जयभारत होटल माणक चौक पर खोली जिसमें महात्मा गाँधी, नेहरू व सुभाष चन्द्र बोस के पोस्टर लगाये थे। इसे रियासत डूँगरपुर का एकतंत्रीय शासन बर्दाश्त नहीं कर सका। महारावल लक्ष्मणसिंह ने हीरालाल उपाध्याय को बुलाकर होटल का नाम बदलने व राष्ट्रीय नेताओं के फोटो निकालने को कहा लेकिन उपाध्याय ने इन्कार कर दिया। इस पर महारावल लक्ष्मणसिंह के निजी सेवकों ने आकर होटल में तोड़फोड़ की एवं राष्ट्रीय नेताओं के फोटो फाड़ दिये। यही से उन्हें जय हिन्द उपनाम से ख्याति मिली। 3, 4, व 5 अप्रैल 1946 ई. को डूँगरपुर राज्य प्रजामण्डल का अधिवेशन हुआ जिसमें प्रजामण्डल के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में भाग लिया एवं अधिवेशन को सफल बनाने के लिए स्वयं सेवक का कार्य किया।[6]

डूँगरपुर राज्य प्रजामण्डल के सहयोगियो व श्री भोगीलाल पण्ड्या आदि वरिष्ठ कार्यकर्ताओ से उपाध्याय का सम्पर्क हुआ। प्रजामण्डल के उद्देश्य तथा प्रवृतियों में भाग लेने के साथ, वे प्रजामण्डल के सक्रिय सदस्य बन गये। जिससे महारावल साहब की एकतन्त्री सरकार के पुलिस कर्मी तथा अन्य सहयोगी विरोध करने लगे। डराने–धमकाने तथा प्रलोभन भी देते रहे। उपाध्याय ने एकतंत्री हुक्म को समाप्त कर उत्तरदायी शासन को कायम करने के विचारो को अपने मन में अधिक मजबूत किया। जोश–खरोश के साथ अपने मार्ग कों प्रशस्त करते रहे । जिससे चिढ़ कर माणक चौक में प्रजामण्डल की आम सभा में लाठी चार्ज कर कइयों को घायल कर दिया गया तथा उपाध्याय की होटल में घुस कर मारपीट के अलावा होटल का सारा–सामान तोड़ डाला गया।[7]

30 अप्रैल 1946 ई. को देवराम शर्मा को राज्य की फौज गिरफ्तार करके ट्रक में बैठाकर ला रही थी। वह ट्रक डूँगरपुर जा रहा था। डूँगरपुर जाने वाला मार्ग इन्दाडौ़ होकर जाता था। इस कारण उपाध्याय ट्रक की आवाज सुनकर बाहर आ गये। होटल व्यवसाय होने के कारण ट्रक का ड्राईवर उपाध्याय को जानता था। उसने ट्रक रोक दी। ट्रक में बैठने पर उपाध्याय को देवराम शर्मा की गिरफ्तारी का पता चला तथा वे रात्रि 12 बजे डूँगरपुर पहुँचे। डूँगरपुर जाकर उन्होंने रात में ही भोगीलाल पण्ड्या को देवराम शर्मा की गिरफ्तारी की बात सुनाई। दूसरे दिन जोशी भूमिगत हो गये।[8]

हरिदेव जोशी जब भूमिगत हो गये तब भोगीलाल पण्ड्या, कुरीचन्द जैन, कुरीचन्द पंचाल, शिवलाल कोटड़िया भी गिरफ्तार हो गये। तब घोड़ी गाँव से हरिदेव जोशी पेम्पलेट छिपाकर जयभारत होटल भेजते थे। वहाँ से पेम्पलेट लेकर उपाध्याय, कुरीचंद जैन, किशोरीलाल जड़िया, नन्दकिशोर धोबी, करूणाशंकर पण्ड्या, कन्हैयालाल चोबीसा आदि इसे रात में गाँव व डूँगरपुर शहर की दीवारों पर चिपकाते थे। डूँगरपुर शहर में रियासत द्वारा जो अत्याचार व दमन होता था इसकी खबर उपाध्याय व उनके साथी हरिदेव जोशी को पहुँचाते थे। [9]

सन् 1946 ई. में उपाध्याय ने माणक चौक में ही जय भारत बुक सेलर्स के नाम से स्टेशनरी व कोर्स–बुक्स की दूसरी दुकान लगाई। उस पर हमलावर ने सारा–सामान बरबादकरने के सिवाय दूकान में राष्ट्रपिता, महात्मा गाँधी, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, मौलाना आजाद, भगत सेन, चन्द्रशेखर आदि राष्ट्रीय नेताओं के फोटो उतार कर तोड़ डाले। 2 जून, 1947 ई. को जूनावाड़ा काण्ड में भोगीलाल पण्ड्या, शिवलाल कोटड़िया व गौरीशंकर उपाध्याय को गिरफ्तार करके धम्बोला थाने में बन्द कर दिया। तब हीरालाल उपाध्याय व उनके साथियों ने मिलकर माणक चौक पर सभा का आयोजन कर विरोध प्रदर्शन किया। रियासती पुलिस ने इस सभा में उपस्थित लोगों पर लाठी चार्ज किया जिसमें हीरालाल उपाध्याय घायल हो गये। उन्हें पाँच दिन अस्पताल रहना पड़ा।[10]

हीरालाल उपाध्याय को अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद रियासत की दमनात्मक नीति के विरूद्ध सभा का आयोजन कर उत्तरदायी शासन की माँग की। 17 जून, 1946 ई माणिक्यलाल वर्मा की अध्यक्षता में रियासत को हीरालाल व उनके साथियों ने ज्ञापन दिया और 21 जून, 1947 ई. को बन्दियों को छोड़ने की माँग की। माँग पूर्ण न होने पर 22 जून को आन्दोलन शुरू किया जायेगा। इस पर रियासती प्रशासन ने भयभीत होकर सभी बन्दियों को 21 जून को रात 12.5 पर छोड़ दिया। 22 जून, 1947 को भोगीलाल पण्ड्या व उनके साथियों ने माणक चौक में सभा का आयोजन किया जिसमें 10,000 लोग एकत्रित हुए।[10अ]

इसी दौरान जीवन के मध्यकाल में उनकी जीवन संगिनी श्रीमती हंसमुख बाई रोग ग्रस्त हो गई। लम्बे समय तक बीमारी के चलते इलाज पर भारी खर्च ने उनके व्यवसाय को प्रभावित किया और वे आर्थिक विपन्नता से घिर गये। इसी बीच उनकी पत्नी अपने चार पुत्रों व दो पुत्रियों को छोड़कर स्वर्ग सिधार गई। यह समय उनके लिए किसी विराट वज्रपात से कम नहीं था। संघर्षों को अपना जीवन साथी बना चुके हीरालाल उपाध्याय ने हिम्मत नहीं हारी।[11]

आजादी के बाद हीरालाल ने सक्रिय राजनीति से संन्यास लेकर आदिवासी समाज में फैली हुई बुराईयों को दूर करने के लिए कार्य किया तथा आदिवासी को उनके अधिकार के प्रति जागृत करने का प्रयास किया। रियासती आन्दोलन में भाग लेने के कारण हीरालाल उपाध्याय की तस्वीर स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में बाँसवाड़ा व डूँगरपुर की प्रदर्शनी में लगाई गयी। 8 जून, 1997 ई. को मुख्यमंत्री भैरोसिंह शेखावत व लालकृष्ण आडवाणी ने सामुदायिक भवन डूँगरपुर में हीरालाल उपाध्याय का स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में सम्मान किया।

संदर्भ

[1] हीरालाल उपाध्याय द्वारा आत्मकथा शैली में लिखा गया निजी संग्रह
(अ) राजस्थान पत्रिका उदयपुर संस्करण दि. 7 मार्च 1997

[2] पाण्डे, गुलाबः श्री गौड़ नवयुवक सेवा संघ 2004 पृ. 53
(अ) साक्षात्कारः श्री हीरालाल उपाध्याय दि. 25.7.06

[3] शिवलाल कोटड़िया अध्यक्ष डूँगरपुर राज्य प्रजामण्डल द्वारा लिखा गया निजी संस्मरण पृ. 1

[4] पाण्डे, गुलाबः श्री गौड़ नवयुवक सेवा संघ 2004 पृ. 53
(अ) स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयन्ती पर संवाद 'वागड़ के स्वाधीनता सेनानियों' से राजस्थान पत्रिका संस्करण बाँसवाड़ा

[5] साक्षात्कारः श्री हीरालाल उपाध्याय दि. 25.7.06
(अ) पाण्डे, गुलाबः श्री गौड़ नवयुवक सेवा संघ 2007 पृ. 53

[6] शिवलाल कोटड़िया अध्यक्ष डूँगरपुर राज्य प्रजामण्डल द्वारा लिखा गया निजी संस्मरण पृ. 2
(अ) शर्मा, उत्सवलालः श्री भोगीलाल पण्ड्या निजी स्मृति ग्रन्थ पृ.116–117.
(ब) जोशी, सुमनेशः राजस्थान के स्वतन्त्रता सेनानी पृ.346

[7] शिवलाल कोटड़िया अध्यक्ष डूँगरपुर राज्य प्रजामण्डल द्वारा लिखा गया संस्मरण पृ. 2

[8] शर्मा, उत्सवलालः श्री भोगीलाल पण्ड्या निजी स्मृति ग्रन्थ पृ.137
(अ) साक्षात्कारः श्री नन्दकिशोर धोबी दि. 25.7.06

[9] उपरोक्त, पृ.137

[10] शिवलाल कोटड़िया अध्यक्ष प्रजामण्डल डूँगरपुर द्वारा लिखा निजी संग्रह, पृ.
शर्मा, उत्सवलाल : श्री भोगीलाल पण्ड्या निजी स्मृति ग्रन्थ पृ. 179

[11] शर्मा, उत्सवलाल : श्री भोगीलाल पण्ड्या निजी स्मृति ग्रन्थ पृ.179
(अ) पाण्डे, गुलाबः श्री गौड़ नवयुवक सेवा संघ 2004 पृ.53